विषयानुक्रमणिका

प्रथम लम्भ

विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण और पीठिका	१
जम्बूद्वीपके हेमाङ्गद देशमें राजपुरी नगरीका वर्णन	४
राजा सत्यन्धरका वर्णन	८
विजया रानीका वर्णन	१३
राजा सत्यन्धरकी विषयासक्ति और मन्त्रियोंका हितोपदेश	१४
काष्ठाङ्गारके लिए राज्यसमर्पण	१६
विजया रानीका स्वप्न दर्शन और मागधजनोंके द्वारा जागरणगीत	१७
पतिसे स्वप्नोंका फल पूछना, रानीका मूर्च्छित होना, राजाका समझाना	२१
रानीकी गर्भावस्थाका वर्णन	२३
काष्ठाङ्गारके द्वारा मन्त्रियोंके साथ मन्त्रणा, धर्मदत्त मन्त्रीका प्रतिकार करना, राजभवनका सेना द्वारा घेरा जाना, द्वारपालके द्वारा राजाको सूचना, विजयाका मूर्च्छित होना, राजाका सम्बोधन, केकीयन्त्रमें बैठाकर विजयाका आकाशमें विचरण, युद्ध, युद्धमें राजाका मारा जाना	२५
रानीके केकीयन्त्रका राजपुरीके श्मशानमें उतरना, जीवन्धरका जन्म, रानीका विलाप, देवीका आगमत, गन्धोत्कट वैश्यके द्वारा जीवन्धरका अपने घर ले जाना, रानीका दण्डक वनमें पहुँचना	३०
जीवन्धरकी बाल-लीलाका वर्णन	३६

द्वितीय लम्भ

जीवन्धरका विद्यालयमें विद्याध्ययन, जीवन्धरके गुरुकी आत्मकथा	३६
एकान्तमें गुरुने जीवन्धरको बताया कि 'तुम राजपुत्र हो' काष्ठाङ्गारने तुम्हारे पिता सत्यन्धरको मारा है, यह सुनकर जीवन्धरका काष्ठाङ्गारके प्रति कुपित होना तथा मारनेके लिए उद्यत होना, गुरुके द्वारा समझाया जाना और एक वर्ष तक क्षमा ग्रहण करना। गुरुका दीक्षा लेना।	४५
जीवन्धरके तारुण्यका वर्णन	४६
कालकूट वनचर द्वारा गोपालोंका गोधन हरा जाना, गोपालोंका काष्ठाङ्गारके द्वारपर रोना, काष्ठाङ्गारका सेना भेजना, सेनाका हारकर भागना, नन्दगोपका घोषणा कराना, जीवन्धरका गोपालोंको जीतकर गोधन वापिस लाना, पद्मास्यका गोविन्दाके साथ विवाह होना	४७

तृतीय लम्भ

पद्मास्यकी गोविन्दाके साथ क्रीड़ा, श्रीदत्त नामक वैश्यकी धनार्जनकी इच्छा, उसकी समुद्र यात्राका वर्णन	५५
द्वीपान्तरमें धनार्जन, वापिस आते समय कृत्रिम तूफानसे उसके जहाजका डूब जाना, एक काष्ठखण्डके सहारे उसका बाहर निकलना, घर विद्याधरके लिए अपना सब समाचार सुनाना, उसके साथ विजयार्ध पर्वतपर जाना, विजयार्धका वर्णन	५७

विषय पृष्ठ

विजयार्धकी दक्षिण श्रेणीमें नित्यालोकपुरी नगरी ५८
गरुडवेग राजा, उसकी धारिणी पत्नी तथा गन्धर्वदत्ता पुत्रीका वर्णन, धर विद्याधर का आत्म परिचय। गरुड़वेगके साथ श्रीदत्तका साक्षात्कार, पुरानी मित्रताका प्रकाश, स्वयंवरके लिए श्रीदत्तको कन्या सौंपा जाना, श्रीदत्तका नगरीमें वापिस आना, स्वयंवर-मण्डपका वर्णन, वीणा-वादनमें जीवन्धर द्वारा गन्धर्वदत्ताका पराजय, गन्धर्वदत्ताका सौन्दर्य वर्णन और विवाह ६२
सम्भोग शृङ्गार वर्णन ७४

चतुर्थ लम्भ

वसन्तऋतु वर्णन, नागरिक लोगोंका वन क्रीड़ाके लिए जाना, वन क्रीड़ाका वर्णन ७६
ब्राह्मणोंके द्वारा कुत्ताका घायल किया जाना, जीवन्धरका उसके लिए णमोकार मन्त्र सुनाना, उसके फलस्वरूप कुत्ताका सुदर्शन यक्ष होना, यक्षके द्वारा आकर जीवन्धर-का आभार मानना ७९
जल-क्रीडाका वर्णन ८२
जीवन्धरके द्वारा गुणमाला और सुरमञ्जरीके चूर्णकी परीक्षाका वर्णन ८४
हाथी का गुणमाला की ओर आक्रमण, जीवन्धरके द्वारा हाथीका वश किया जाना, जीवन्धर और गुणमालाके हृदयमें अनुरागकी उत्पत्ति ८५
चित्रलेखन, शुक द्वारा पत्रप्रेषण ८६
जीवन्धर और गुणमालाका विवाह ८९

पञ्चम लम्भ

पराजित हाथीका आहार छोड़ना, सेवकों द्वारा काष्ठाङ्गारसे जीवन्धरकी शिकायत करना, काष्ठाङ्गारका कुपित होकर उन्हें पकड़नेके लिए सेना भेजना। सेनाके साथ जीवन्धरका युद्ध, तदनन्तर गन्धोत्कटकी सलाहसे जीवन्धरका काष्ठाङ्गारके सम्मुख जाना, काष्ठाङ्गारके द्वारा जीवन्धरको शूलारोपणकी सजा, जीवन्धर द्वारा सुदर्शन यक्षका स्मरण, यक्षका आना, जीवन्धरको अपने भवनमें ले जाकर उनका स्वागत-सम्मान करना ९१
तीर्थयात्राके उद्देश्यसे जीवन्धरका देश भ्रमण, एक अटवीके बीच दावानलमें फँसे हाथियोंको देखकर जीवन्धरके द्वारा यक्षका स्मरण, यक्षके द्वारा जल वर्षाकर हाथियोंकी रक्षा होना ९७
पल्लव देशकी चन्द्राभ नगरीमें राजा धनपतिकी पुत्री पद्माको साँपके काटनेपर जीवन्धरके द्वारा उसका विषमोचन। अन्तमें जीवन्धरके साथ उसके विवाहका वर्णन, अलंकार धारण आदि ९९

षष्ठ लम्भ

सूर्यास्त वर्णन, रात्रितिमिर वर्णन, जीवन्धरका पद्माके घरसे बिना कहे चले जाना, उनका पता चलानेके लिए दूत भेजना, पर पता नहीं चलना १०६
तीर्थयात्राके लिए जीवन्धरका भ्रमण जारी रहना, किसी तपोवनमें मिथ्यातप तपने-वाले साधुओंको जीवन्धरका सदुपदेश १०९

विषय पृष्ठ

वनमें जिनविमान (जिनमन्दिर) का दर्शन, जीवन्धरके स्तोत्रके प्रभावसे उसके किवाड़ अपने आप खुल जाना, जिनभगवान्के दर्शन और पूजनका वर्णन ११८

सेवकके द्वारा क्षेमनगरीके सुभद्रसेठ तथा क्षेमश्रीका वर्णन, सेवक द्वारा सूचना मिलने पर सेठका आगमन, जीवन्धरका उसके घर जाना, सेठ द्वारा पुत्री विवाहकी प्रार्थना, जीवन्धरकी स्वीकृति, तदनन्तर विवाह वर्णन ११९

सप्तम लम्भ

जीवन्धरका रात्रिके समय क्षेमश्रीके भवनसे चला जाना, जीवन्धरकी आभूषण दानकी इच्छा, किसानका सामने आना, उसके लिए जीवन्धर द्वारा गृहस्थ धर्मका उपदेश देनेके बाद आभूषण दान करना, मध्याह्नकालमें जीवन्धरका एक उद्यानमें विश्राम करना १२१

विद्याधरीका जीवन्धर पर मोहित होना, जीवन्धर द्वारा दुःखी विद्याधरके लिए धर्मोपदेश देना, उसमें स्त्रियोंके मायास्वभावका वर्णन आदि १२६

जीवन्धरका उद्यानमें जाना, कुछ राजकुमारों द्वारा बाणसे आमके फल तोड़नेका निष्फल प्रयास, जीवन्धरका अपनी कलाका प्रदर्शन, राजकुमारोंके अनुरोधसे जीवन्धरका उनके घर जाना। हेमाभपुरीके राजा दृढमित्रके द्वारा जीवन्धरका सत्कार, जीवन्धरका उनके पुत्रोंके लिए अस्त्र विद्याका उपदेश, कृतज्ञताके रूपमें जीवन्धरके साथ राजपुत्री—कनकमालाका विवाह १३०

अष्टम लम्भ

एक स्त्री द्वारा जीवन्धरके लिए नन्दाढ्यके आनेका समाचार, दोनों बन्धुओंका चिरमिलन, पिछली घटनाका वर्णन, गन्धर्वदत्ताकी सहायतासे नन्दाढ्यका यहाँ तक आना, गन्धर्वदत्ताके पत्रमें गुणमालाके विरहका वर्णन १३७

राजमन्दिरके सामने गोपों द्वारा अपने गोधन चुराये जानेका विवरण, उनकी रक्षाके लिए जीवन्धरका जाना, वहाँ पद्मास्य आदि मित्रोंका मिलना १४३

मित्रवार्तामें मित्रोंके अपने आनेका वृत्तान्त तथा मार्गमें विजयामाताके दर्शनका वर्णन, उसे सुनकर जीवन्धरका मातृदर्शनके लिए उत्कण्ठित होना १४९

मातृदर्शन, यक्षका आगमन, मातृप्रेम दर्शन, जीवन्धरकी माताके प्रति स्वविक्रमोक्ति, माताको आश्वासन देकर जीवन्धरका राजपुरी जाना, नगरके बाहर मित्रोंको ठहराकर स्वयं नगरकी प्रदक्षिणा करना, कन्दुकके आघातसे सागरदत्त सेठकी पुत्री विमलाके प्रति जीवन्धरका अनुराग बढ़ना तथा उसके साथ विवाह होना १५३

नवम लम्भ

विमलाको छोड़ जीवन्धरका मित्रोंके पास आना, मित्रोंकी व्यङ्ग्यपूर्ण वाणीसे प्रेरित हो जीवन्धरका सुरमञ्जरीको वश करनेका निश्चय करना, वृद्धका रूप बनाकर सुरमञ्जरीके महलमें जाना, वृद्धावस्थाका मनोहर वर्णन, सुरमञ्जरी द्वारा वृद्धको भोजन कराना, उसका वहींपर विश्राम करना, रात्रिमें आकर्षक गाना गाना, सुरमञ्जरीका जीवन्धरकी प्राप्तिका उपाय पूछना, जीवन्धर द्वारा कामदेवकी पूजा करनेका उपदेश देना, सुरमञ्जरीका वृद्धको लेकर कामदेवके मन्दिर जाना, वहाँ कामदेवकी पूजा तथा उससे वरदानमें जीवन्धरकी प्राप्तिकी प्रार्थना, जीवन्धरका

विषय पृष्ठ

असली रूपमें प्रकट होना, अन्तमें कुबेरदत्त द्वारा सुरमञ्जरीके साथ जीवन्धरका विवाह होना १५६

दशम लम्भ

जीवन्धर कुमारका गन्धोत्कट और सुनन्दासे मिलन, गन्धर्वदत्ता तथा गुणमालासे मिलन, तदनन्तर स्वपक्षको प्रबल करनेके उद्देश्यसे जीवन्धरका अपने मामाके यहाँ विदेह देशमें जाना, मामा गोविन्द राजाके द्वारा इनका सत्कार तथा सम्मान होना, मन्त्रियोंके साथ राजमन्त्रणा, तदुपरान्त गोविन्दराजका काष्ठाङ्गारके प्रेषित पत्रके अनुसार राजपुरी आना, लक्ष्मणा नामक पुत्रीका स्वयंवर रचना, जीवन्धरका विजयी होना, काष्ठाङ्गारका कुपित होकर युद्ध करना, गोविन्द राजा द्वारा काष्ठाङ्गारके कपटका रहस्योद्घाटन करना, अनेक राजाओंका जीवन्धर के पक्षमें आना, जीवन्धर तथा काष्ठाङ्गारका भयंकर युद्ध होना, उसका विस्तृत वर्णन, काष्ठाङ्गारका मारा जाना, विजयी जीवन्धरका राजमहलमें प्रवेश, काष्ठाङ्गारके परिवारको अभय दान, लक्ष्मणाके साथ जीवन्धरका विवाह १७०

एकादश लम्भ

जीवन्धरके राजकौशलका वर्णन, परिवार मिलन, मन्दिर निर्माण, विजया रानीका दीक्षा लेना, जीवन्धरकी आठों रानियोंके पुत्रोत्पत्ति २१७

वसन्तऋतुमें जीवन्धरका सपरिवार वन क्रीडाके लिए जाना, वहाँ वनपाल द्वारा वानरी के हाथसे तालफलका छीना जाना देखकर जीवन्धरका विरक्त होना, वैराग्य वर्णन, मुनिराजसे धर्मका उपदेश सुनना, अपने पूर्वभव सुनना, अपने पुत्र सत्यन्धरको उपदेश देकर राज्य देना, तदनन्तर दीक्षा लेनेके उद्देश्यसे भगवान् महावीरस्वामीके समवसरणमें जाना २२२

समवसरणका वर्णन, अष्टप्रातिहार्योंका वर्णन, भगवान् महावीरका स्तवन कर दीक्षा धारण करना, कठिन तपश्चर्या करके मोक्ष प्राप्त करना २३०

परिशिष्ट—हिन्दी अनुवाद

प्रथम लम्भ २३७
द्वितीय ,, २५४
तृतीय ,, २६१
चतुर्थ ,, २७०
पञ्चम ,, २७६
षष्ठ ,, २८३
सप्तम ,, २८६
अष्टम ,, २९५
नवम ,, ३०४
दशम ,, ३०८
एकादश ,, ३२६